विचार बिन्दु

हर चीज़ की कीमत व्यक्ति की जेब और ज़रूरत के अनुसार होती है और शायद उसी के अनुसार वह अच्छी या बुरी होती है। –संतोष गोयल

स्कूलों में नामांकन बढ़ना राजस्थान की बड़ी उपलब्धि

राजस्थान ही क्या यह समूचे शिक्षा क्षेत्र के लिए सकारात्मक खबर मानी जानी चाहिए कि सरकारी स्कूलों में नामांकन बढ़ने के सार्थक प्रयास हुए है। राजस्थान के शिक्षा क्षेत्र से यह उत्साहजनक उपलब्धि मानी जानी चाहिए कि राज्य के सरकारी स्कूलों में पिछले पांच साल की तुलना में इस साल बच्चों के नामांकन में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई है। इसका श्रेय निश्चित रुप से मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और उनकी सरकार को जाता है। यह उपलब्धि इसलिए भी महत्वपूर्ण हो जाती है कि पिछले सालों में सरकारी स्कूलों में नामांकन कम होने का ट्रेंड रहा है और यह बार-बार कहा जाता रहा है कि सरकारी स्कूलों के प्रति लोगों का मोह भंग होता जा रहा है। सरकारी स्कूलों की शिक्षा व्यवस्था और शैक्षणिक माहौल को लेकर सवाल उठाये जाते रहे हैं। हालात तो यहां तक है कि शिक्षा मंत्री मदन दिलावर की कार्यशैली को लेकर प्रतिपक्ष और यहां तक कतिपय शिक्षक संघों द्वारा भी सवाल उठाये जाते रहे हैं पर यह शिक्षा मंत्री मदन दिलावर और उनकी स्कूल शिक्षा से उच्च स्तर से लेकर गांव देहात तक के स्कूलों से जुड़ी टीम को जाता है कि सरकारी स्कूलों में नामांकन के स्तर में बदलाव आया है। गत वर्ष 2025-26 की तुलना में इस शैक्षणिक सत्र में 48 हजार से अधिक नामांकन हुए हैं। तस्वीर का एक पहलू यह भी है कि लड़कों की तुलना में लड़कियों का अधिक नामांकन हुआ है। इससे यह साफ हो जाता है कि राजस्थान में शैक्षणिक माहौल निश्चित रुप से पहले की तुलना में बेहतर हुआ है और प्रदेशवासियों का सरकारी स्कूलों के प्रति विश्वास जमा है।

शिक्षा मंत्री मदन दिलावर की यह खासियत है कि वे बिना किसी आलोचना की परवाह किये अपने एजेण्डे पर काम करते हैं। आलोचना या किसी से डरना उनके जेहन में हैं ही नहीं। इसके साथ ही बेबाक होना उनकी विशेषता रही है। बेबाकी होने के कारण ही वे प्रतिपक्ष या अपने विरोधियों के निशाने पर रहते हैं पर एक खास बात यह है कि उनकी जितनी ज्यादा आलोचना होती है उससे अधिक बेहतर परिणाम सामने आते हैं। स्कूली शिक्षा का नामांकन इसका उदाहरण है। प्राप्त आंकड़ों के अनुसार इस साल सरकारी स्कूलों में 7298854 विद्यार्थियों के नामांकन हुए हैं। जबकि इससे पहले के साल में 7250495 नामांकन हुए थे। पिछले पांच सालों के आंकड़ों पर नजर ड़ाली जाए तो यह सर्वाधिक है। खासबात यह है कि नामांकन का यह आंकड़ा बांसवाड़ा, उदयपुर, सिरोही, जालौर और बाड़मेर में अधिक बढ़ा है। हांलाकि कई जिलों में नामांकन में कमी आई है पर सुदूर और आदिवासी व रेगिस्तानी जिलों में स्कूलों में नामांकन बढ़ना बड़ी उपलब्धि मानी जानी चाहिए। फिर समग्र रुप से भी नामांकन में बढ़ोतरी हुई है।

शिक्षा मंत्री मदन दिलावर की यह खासियत है कि वे बिना किसी आलोचना की परवाह किये अपने एजेण्डे पर काम करते हैं। आलोचना या किसी से डरना उनके जेहन में हैं ही नहीं। इसके साथ ही बेबाक होना उनकी विशेषता रही है। बेबाकी होने के कारण ही वे प्रतिपक्ष या अपने विरोधियों के निशाने पर रहते हैं पर एक खास बात यह है कि उनकी जितनी ज्यादा आलोचना होती है उससे अधिक बेहतर परिणाम सामने आते हैं।

इससे एक बात साफ हो गई है कि यदि ईच्छा शक्ति हो तो परिणाम सकारात्मक ही आते हैं। स्कूलों में नामांकन बढ़ाने के योजनाबद्ध प्रयास किये गये। राजस्थान शिक्षा सेतु अभियान के तहत प्रयास किये गये और इसके लिए शिक्षकों और प्राचार्यों की भी भूमिका तय की गई है। यह अभियान भी दो चरणों में चलाया गया। पहले चरण का अभियान 15 अगस्त को पूरा होने जा रहा है तो 16 अगस्त से 30 सितंबर दूसरे चरण का अभियान चलेगा। अभियान के दौरान स्कूल टीचर और प्राचार्यों की सहभागिता तय की गई है। वे अपने क्षेत्र में कोई भी बच्चा नामांकन से शेष नहीं रहे इसका प्रयास करेंगे। सीधे संवाद कायम करेंगे और बालक-बालिकाओं का यदि अभी तक नामांकन नहीं हुआ है तो नामांकन सुनिश्चित करायेंगे। सरकार के इस सोच के पीछे भी सकारत्मिकता है। इससे दो लाभ होने तय है। एक तो इलाके के निवासियों और स्कूल के अध्यापकों व प्राचार्यों की आपसी सहभागिता बढ़ेगी। लोगों में स्कूली शिक्षा व्यवस्था के प्रति सकारात्मक सोच विकसित होगी तो दूसरी और बच्चे नामांकन से वंचित नहीं रहेंगे। इसके अलावा स्कूल प्रबंधन और इलाके के नागरिकों में सौहार्द पूर्ण माहौल बनने से समन्वित विकास भी होगा। शिक्षा व्यवस्था को लेकर नकारात्मकता समाप्त होगी और इसके परिणाम भी अच्छे ही प्राप्त होंगे।

अब नामांकन बढ़ोतरी के साथ ही नई चुनौतियों को भी नहीं नकारा जा सकता। सबसे बड़ी चुनौती ड्रॉपआउट को लेकर है। सरकार को इसके प्रति गंभीर होना होगा और बीच सत्र के स्कूल छोड़ने के हालात नहीं होने देने हैं। बीच सत्र स्कूल छोड़ने का स्तर शून्य तक लाना होगा और इसके लिए ग्रामीणों और शिक्षकों दोनों को ही प्रयास करने होंगे। दूसरा स्कूल की शिक्षा के स्तर को बनाये रखने की जिम्मेदारी शिक्षकों को निभानी होगी। आज सुविधाओं और साधनों की कोई कोरकसर सरकार द्वारा नहीं छोडी जाती तो शिक्षकों को भी लोगों में शिक्षा और शैक्षणिक माहौल के प्रति आमजन में विश्वास जमाना होगा। विद्यार्थियों के लिए जो भी सरकारी सहयोग सुलभ कराया जाता है उसका लाभ बच्चों तक पहुंचना चाहिए। इसके साथ ही सभी को ईमानदारी से अपने दायित्व को निभाने का संकल्प लेना होगा। नामांकन बढ़ना निश्चित रुप से उपलब्धि है और इसे बनाये रखने के प्रयास जारी रखने होंगे।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
(वरिष्ठ लेखक)

राशिफल गुरूवार 13 अगस्त, 2026

पंडित अनिल शर्मा

सावन मास, शुक्ल पक्ष, प्रतिपदा तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2083, आश्लेषा नक्षत्र प्रातः 6:07 तक, वारियान योग दिन 12:16 तक, किस्तुघ्न करण प्रातः 9:54 तक, चन्द्रमा प्रातः 6:07 से सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कर्क, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-मिथुन, बुध-कर्क, गुरू-कर्क, शुक्र-कन्या, शनि-मीन राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज से नक्त व्रत आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:39 तक, लाभ-अमृत 10:54 से 12:32 तक, लाभ-अमृत 12:32 से 3:47 तक, शुभ 5:25 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:01, सूर्यास्त 7:02

मेष
परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आज आवश्यक कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। आज आपसी ईर्ष्या-वैमनस्यता के कारण परेशानी हो सकती है।

सिंह
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक अड़चनें दूर होने लगेंगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। परिवार में सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी।

धनु
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक परेशानियां अभी यथावत बनी रहेगी। परिवार में आपसी मतभेद हो सकते हैं।

वृष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

कन्या
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज मन में असंतोष बना रहेगा। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

मकर
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

मिथुन
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। आज मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक परेशानी दूर होने लगेगी।

तुला
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित योजना का क्रियान्वयन होगा। आज आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आज विवादित मामलों का निपटारा हो सकता है।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में भागदौड़ रहेगी। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। आर्थिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है। आज मानसिक तनाव दूर होने लगेगा। मनःस्थिति में सुधार होगा।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही परेशानियां दूर होने लगेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से सम्पन्न हो सकते हैं। आज आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय दूर होगा। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। आज व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस : श्रीअरविन्द का प्रथम स्वप्न और अखंड भारत-बोध

सूर्यप्रतापसिंह राजावत

भारत आज स्वतंत्र है, पर उसने एकता प्राप्त नहीं की है, केवल एक खंडित स्वतंत्रता प्राप्त की है। -श्रीअरविन्द, 15 अगस्त 1947

15 अगस्त 1947 भारत की स्वतंत्रता का दिन था और श्रीअरविन्द का 75वाँ जन्मदिवस भी। इस ऐतिहासिक अवसर पर अपने प्रसिद्ध संदेश में उन्होंने अपने पाँच स्वप्नों का उल्लेख किया। उनका प्रथम स्वप्न था-भारत की स्वतंत्रता और एकता। उन्होंने स्वतंत्रता का स्वागत किया, किंतु विभाजन को भारत की अंतिम नियति नहीं माना। उनका विश्वास था कि विभाजन समाप्त होना चाहिए और भारत की एकता पुनः स्थापित होनी चाहिए। इसीलिए विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस केवल 1947 की त्रासदी का स्मरण नहीं, बल्कि भारत की एकता पर पुनर्विचार का अवसर भी है।

विभाजन की पीड़ा समझने के लिए श्रीअरविन्द का राष्ट्र-बोध महत्वपूर्ण है। वे पूछते हैं-राष्ट्र क्या है? हमारी जन्मभूमि क्या है? उनके लिए राष्ट्र जमीन का टुकड़ा, कोई नाम अथवा मन की कल्पना नहीं, बल्कि उन करोड़ों लोगों की सम्मिलित जीवंत शक्ति है जिनसे राष्ट्र बनता है। इस दृष्टि से 1947 में केवल भूमि नहीं बँटी; भारत की सभ्यतागत चेतना को भी गहरा आघात पहुँचा। इसलिए अखंडता का प्रश्न भूगोल के साथ भारत-बोध की अखंडता का भी प्रश्न है।

विभाजन की कहानी 1947 से शुरू नहीं होती। 1942 का क्रिप्स मिशन इसका महत्वपूर्ण पड़ाव था। 31 मार्च 1942 को श्रीअरविन्द ने सर स्टैफर्ड क्रिप्स को संदेश भेजकर उनके प्रस्तावों का स्वागत किया। उन्होंने भारतीय नेतृत्व से इन्हें बातचीत का आधार बनाने का आग्रह किया तथा अपने प्रतिनिधि के माध्यम से महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू और सी. राजगोपालाचारी तक अपना दृष्टिकोण पहुँचाने का प्रयास किया। श्रीअरविन्द स्वतंत्रता के साथ भारत की भावी एकता और सुरक्षा को भी देख रहे थे। क्रिप्स मिशन विफल हो गया। इसलिए इतिहास में प्रश्न बना हुआ है-क्या 1942 में भारत ने ऐसा अवसर खो दिया जिससे विभाजन को टालने की संभावना बन सकती थी? इसे निश्चित निष्कर्ष के बजाय गंभीर ऐतिहासिक प्रश्न के रूप में देखना उचित है।

1946 का नोआखली आने वाली विभीषिका की भयावह चेतावनी था। इसलिए विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस का उद्देश्य किसी वर्तमान समुदाय के विरुद्ध आक्रोश उत्पन्न करना नहीं, बल्कि उस विभाजनकारी मानसिकता को पहचानना और अस्वीकार करना है जो भारतीय को भारतीय के विरुद्ध खड़ा करती है।

वीर सावरकर के दो राष्ट्र संबंधी विचारों और पाकिस्तान की माँग के बीच अंतर करना आवश्यक है। हिंदू और मुसलमानों को अलग राजनीतिक-सांस्कृतिक राष्ट्र मानने संबंधी उनके कथन को सीधे भारत के भौगोलिक विभाजन की माँग नहीं माना जा सकता। सावरकर पाकिस्तान निर्माण और भारत के क्षेत्रीय विखंडन के विरोधी थे। अतः दो राष्ट्रों की अवधारणा और पाकिस्तान की माँग समान नहीं थीं। यह अंतर विभाजन के इतिहास को निष्पक्ष रूप से समझने के लिए महत्वपूर्ण है।

डॉ. बी. आर. अम्बेडकर ने पाकिस्तान के प्रश्न का विश्लेषण कठोर राजनीतिक यथार्थ के आधार पर किया। उनका महत्वपूर्ण प्रश्न था-यदि धर्म के आधार पर देश विभाजित होता है तो दोनों ओर रहने वाले अल्पसंख्यकों का भविष्य क्या होगा? उन्होंने जनसंख्या के हस्तांतरण के विकल्प पर भी गंभीरता से विचार किया। मोहम्मद अली जिन्ना के नेतृत्व में मुस्लिम लीग ने दो-राष्ट्र सिद्धांत को पाकिस्तान की माँग का राजनीतिक आधार बनाया। किंतु प्रश्न है-क्या पाकिस्तान बनने से राष्ट्रीय पहचान और सांप्रदायिक विभाजन की समस्या समाप्त हो गई?

श्रीअरविन्द ने हिंदू-मुस्लिम प्रश्न को केवल राजनीतिक सत्ता-संघर्ष नहीं माना। उनके अनुसार वास्तविक समस्या दो ऐतिहासिक सभ्यताओं के संबंध की भी थी। उन्होंने इसके दो संभावित समाधान देखे-एक उच्चतर आध्यात्मिक सिद्धांत, जो दोनों में समन्वय स्थापित करे; अथवा ऐसी राजनीतिक देशभक्ति, जो धार्मिक संघर्ष से ऊपर उठकर दोनों समुदायों को राष्ट्रीय चेतना में बाँध दे। यह विचार विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस को वर्तमान से जोड़ता है-विभाजन को याद करने का उद्देश्य नया विभाजन पैदा करना नहीं, बल्कि उन कारणों को पहचानना है जिन्होंने भारत को विभाजित किया।

मध्यकालीन इतिहास को केवल हिंदू बनाम मुस्लिम के सरल द्वंद्व में नहीं बाँटा जा सकता। मुस्लिम समाज के भीतर भी दो धाराएँ थीं-समन्वय और पृथकता। एक ओर अकबर और दारा शिकोह जैसे व्यक्तित्व थे, दूसरी ओर धार्मिक पृथकता पर जोर देने वाली शक्तियाँ।

दारा शिकोह ने उपनिषदों का फारसी अनुवाद कराया और मज्मा-उल-बहरैन-दो समुद्रों का संगम-में हिंदू और इस्लामी आध्यात्मिक परंपराओं के बीच संवाद खोजा। इसलिए दारा भारतीय सभ्यतागत समन्वय के महत्वपूर्ण प्रतीक बनते हैं।इसके विपरीत औरंगजेब से जुड़ी ऐतिहासिक स्मृति का एक पक्ष धार्मिक रूढ़िवाद से संबंधित है। विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस प्रतिशोध का नहीं, स्मृति, आत्ममंथन और राष्ट्रीय संकल्प का दिवस है। विभाजन की सबसे बड़ी शिक्षा है कि सांप्रदायिक पृथकतावाद, अविश्वास और राजनीतिक विखंडन की अंतिम कीमत सामान्य मनुष्य चुकाता है।अखंड भारत को इसलिए केवल भूगोल की पुनर्कल्पना नहीं समझना चाहिए। वह सबसे पहले अखंड भारत-बोध की पुनर्स्थापना है-एक ऐसी चेतना जिसमें विविधता हो लेकिन विखंडन नहीं, धार्मिक आस्था हो लेकिन पृथकतावाद नहीं और इतिहास की स्मृति हो लेकिन प्रतिशोध नहीं। इसी अर्थ में कहा जा सकता है-भारत-बोध में दारा शिकोह की समन्वयकारी चेतना का पुनर्जागरण और औरंगजेबी असहिष्णुता की प्रवृत्ति का निष्कासन आवश्यक है।15 अगस्त 1947 को विभाजन की पीड़ा के बीच श्रीअरविन्द ने निराशा नहीं, भविष्य का स्वप्न दिया-स्वतंत्र और पुनः एक भारत का स्वप्न।अतः विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस(14 अगस्त) का संकल्प होना चाहिए-विभाजन को स्मरण करें, विभीषिका से सीखें, पृथकतावादी मानसिकता को अस्वीकार करें और भारत की सभ्यतागत एकता को सुदृढ़ करें।विभाजन इतिहास की पीड़ा है; अखंड भारत-बोध भविष्य का संकल्प।

सूर्यप्रतापसिंह राजावत
अधिवक्ता राजस्थान उच्च न्यायालय जयपुर।

15 अगस्त के विभिन्न प्रधानमंत्री के भाषण के प्रमुख अंश

डॉ. जे. के. गर्ग

स्वतंत्रता दिवस भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण दिन है, क्योंकि यह ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के अंत और स्वतंत्रता और स्वशासन के एक नए युग की शुरुआत का प्रतीक है। स्वतंत्रता दिवस पर देश के प्रधानमंत्रियों के लाल किले से दिए गए भाषणों के प्रमुख अंशों में जवाहरलाल नेहरू का "ट्रिस्ट विद डेस्टिनी", इंदिरा गांधी के सुरक्षा व आत्मनिर्भरता संबंधी संदेश, और नरेंद्र मोदी के विकसित भारत 2047 व आत्मनिर्भर भारत के संकल्प शामिल हैं।

पंडित जवाहरलाल नेहरू (1947) मुख्य अंश:-"जब दुनिया सो रही होगी, तब भारत जीवन और स्वतंत्रता के लिए जागेगा।"संदेश: यह एक ऐतिहासिक क्षण था जब औपनिवेशिक शासन का अंत हुआ और एक नए युग की शुरुआत का संकल्प लिया गया।

15 अगस्त को शास्त्री के भाषण के प्रमुख अंश-प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने स्वतंत्रता दिवस पर देश को संबोधित करते हुए आत्म-निर्भरता, कृषि को प्राथमिकता और राष्ट्रीय एकता पर जोर दिया था। उनके भाषण के मुख्य बिंदु देश की सुरक्षा और आर्थिक मजबूती पर केंद्रित थे।

प्रमुख अंश और संदेश देश की रक्षा और सम्मान:- "हम रहें या न रहें, लेकिन हमारा देश मजबूत रहना चाहिए"

कृषि और खाद्यान्न:-चौथे पंचवर्षीय योजना में कृषि विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई, ताकि देश अनाज के मामले में आत्मनिर्भर बन सके। महंगाई और आर्थिक अनुशासन: बढ़ती कीमतों को नियंत्रित करने और घाटे की वित्त व्यवस्था से बचने का संकल्प लिया गया।

सामूहिक एकता:-देश के नागरिकों से मिलकर देश की कठिनाइयों का सामना करने और पूरी ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का पालन करने की अपील की गई। लाल किले की प्राचीर से लाल बहादुर शास्त्री ने पाकिस्तान को ललकारा, जय जवान जय किसान . अनाज की बचत के लिए उन्होंने सप्ताह में एक दिन उपवास करने की अपील की थी।

इंदिरा गांधी (विभिन्न वर्ष)मुख्य अंश:-राष्ट्रीय अखंडता, एकता और देश की संप्रभुता की रक्षा पर सबसे अधिक जोर। संदेश: देश के आंतरिक और बाहरी खतरों के खिलाफ मजबूत राजनीतिक इच्छाशक्ति और आत्मनिर्भरता का आव्हान।

गरीबों और कमजोर वर्ग का उत्थान:- उनके भाषणों में समाज के सबसे निचले पायदान पर खड़े व्यक्ति की मदद करने की प्रतिबद्धता झलकती थी। उन्होंने कहा था कि यदि भारत के गरीब मजबूत होंगे, तो पूरा देश मजबूत होगा।

शांति और शक्ति:- उन्होंने स्पष्ट किया था कि भारत एक शांतिप्रिय देश है, लेकिन शांति का अर्थ कमजोरी नहीं है। शांति को बनाए रखने के लिए आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास और आंतरिक शक्ति की आवश्यकता होती है।

युवाओं और भविष्य के प्रति अपेक्षाएं : - उन्होंने बच्चों और युवा पीढ़ी को देश का भविष्य बताते हुए उन्हें समान अवसर देने और देश निर्माण में सक्रिय भागीदारी निभाने का आव्हान किया था। प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने 15 अगस्त को जनता से राष्ट्र की एकता को कमजोर करने वाली विघटनकारी शक्तियों के सामने दृढ़ रहने का आव्हान किया। इंदिरा गांधी जनता को शांति और सद्भाव पर भाषण देती हैं। श्रीमती गांधी भारत और उसके पड़ोसी देशों जैसे पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल और श्रीलंका के बीच संबंधों को बढ़ाने पर जोर दिया!

मोरारी जी देसाई के भाषण के मुख्य अंश-प्रधानमंत्री के रूप में मोरारजी देसाई ने 15 अगस्त (विशेषकर 1977 और 1978 में) लाल किले से राष्ट्र को संबोधित किया था। उनके भाषण के मुख्य बिंदुओं में लोकतंत्र की बहाली, जनता की निर्भरता, और देश की अटूट एकता शामिल थे। 15 अगस्त को राजीव गांधी के भाषण के प्रमुख अंश----पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त) पर लाल किले से अपने भाषणों में देश की एकता, लोकतंत्र की मजबूती, तकनीकी विकास और भ्रष्टाचार के खिलाफ कड़े कदम उठाने पर जोर दिया था।

कआर्थिक सुधारों का जिक्र:-देश की कठिन आर्थिक स्थिति और उदारीकरण के फैसलों को मजबूती से सामने रखा।

सुरक्षा और आतंकवाद:-पड़ोसी देश पाकिस्तान को लाल किले से कड़ी चेतावनी दी। उदारीकरण के रास्ते खोलने वाले नरसिम्हा राव के सामने एक ऐसा गंभीर संकट आया कि वह मंदिर-मस्जिद के मामलों में उलझ गए।

देवगौड़ा जीके भाषण के प्रमुख अंश-अगस्त 1996 को स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर लाल किले की प्राचीर से प्रधानमंत्री एच.डी. देवगौड़ा ने भाषण में मुख्य रूप से भारतीय लोकतंत्र की मजबूती, आम न्यूनतम कार्यक्रम और सामाजिक न्याय पर जोर दिया।

प्रधान मंत्री इन्द्र कुमार गुजराल के भाषण के प्रमुख अंश :- 15 अगस्त 1997 को भारत की आजादी की 50वीं वर्षगांठ पर लाल किले की प्राचीर से प्रधानमंत्री इंद्र कुमार गुजराल ने देश को संबोधित किया। उनके भाषण के मुख्य अंश विविधता में एकता पर जोर, गांधीवादी मूल्यों को अपनाना, और देश के आर्थिक विकास व युवाओं की शक्ति पर आधारित थे।

अटल बिहारी वाजपेयी (1999) मुख्य अंश :- पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने लाल किले की प्राचीर से अपने स्वतंत्रता दिवस (विशेषकर 1998, 1999, 2001 और 2003) के संबोधनों में देश की सुरक्षा, शांति, और विकास पर जोर दिया।

विचार शांति और संवाद की पहल:----"हमें लड़ते-लड़ते 50 साल हो गए और कितना खून बहाना बाकी है? लड़ना है हम दोनों को गरीबी से, बेरोजगारी से !

"पड़ोसी देशों के साथ संबंध:-
---- आतंकवाद को हम समाप्त करके रहेंगे। देश की एकता और अखंडता पर आंच नहीं आने दी जाएगी

विकास और आत्मनिर्भरता:---
--"भारत अब रुकने वाला नहीं है। विज्ञान, तकनीक और हमारे मेहनतकश किसानों-युवाओं के दम पर देश नई ऊंचाइयों को छुएगा ! आज भारत विज्ञान, अंतरिक्ष, खेल, शिक्षा और तकनीकी के क्षेत्र में नई ऊंचाइयां छू रहा है। लेकिन देश की असली ताकत उसके युवा हैं। कारगिल विजय के तुरंत बाद दिया गया यह भाषण देश के शौर्य और अजय विश्वास से भरा था। संदेश: भारत शांति चाहता है लेकिन राष्ट्र की सुरक्षा के साथ कोई समझौता नहीं किया जाएगा।

15 अगस्त को मनमोहन सिंह के भाषण :- पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने अपने कार्यकाल (2004 से 2013) के दौरान 15 अगस्त को लाल किले से कुल 10 स्वतंत्रता दिवस भाषण दिए। इन भाषण में मुख्य रूप से गरीबी उन्मूलन, आर्थिक विकास, और राष्ट्रीय सुरक्षा पर जोर दिया गया। मनमोहन सिंह ने लाल किले से गिनाईं सरकार की उपलब्धियां, मनमोहन सिंह ने साल 2013 में लाल किले से अपने भाषण में भारत को "गरीबी, भूख, बीमारी और अज्ञानता" से मुक्त करने की बात कही।

नरेंद्र मोदी (2014 - वर्तमान) मुख्य अंश:-"प्रधान सेवक" के रूप में शुरुआत, स्वच्छ भारत अभियान, मेक इन इंडिया, पंच प्रण, और 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने का रोडमैप।

संदेश:- सबका साथ, सबका विकास, भ्रष्टाचार के खिलाफ जीरो टॉलरेंस, और स्वदेशी तकनीक पर बल।

-डॉ.जे.के.गर्ग
पूर्व संयुक्त निदेशक कॉलेज शिक्षा जयपुर।

जंतर मंतर बनाम राँची

राजेन्द्र भाणावत

गत दो माह में दो बड़े छात्र आंदोलन देश में हुए हैं। पहला 20 जून से 25 जुलाई, 2026 तक कॉकरोच जनता पार्टी के नेतृत्व में दिल्ली के जंतर मंतर पर चला। यह आंदोलन परीक्षा के प्रश्न पत्र लीक होने तथा एन टी ए द्वारा आयोजित अन्य परीक्षाओं में धांधलियों के विरोध में हुआ। बाद में इसमें शिक्षा व्यवस्था को ठीक करने की मांग भी जुड़ गई। छात्रों की प्रमुख माँग यही थी कि पेपर लीक और शिक्षा व्यवस्था की असफलता के कारण शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान को पद छोड़ना चाहिए।इस आंदोलन में प्रमुख शिक्षा विद, वैज्ञानिक और सामाजिक कार्यकर्ता सोनम वांगचुक के साथ अन्य छात्र छात्राएं अनशन पर बैठे। जब 20 जुलाई को छात्रों ने संसद की ओर मार्च करने की घोषणा की तो पुलिस ने बलपूर्वक वांगचुक को जंतर मंतर से उठाकर अस्पताल में भर्ती करा दिया। इसी दौरान छात्रों पर बर्बरता पूर्वक लाठी चार्ज किया गया, आंसू गैस छोड़ी गई जिसके फलस्वरूप अनेक छात्र और पुलिस कर्मी घायल हुए। 25 जुलाई को केंद्रीय मंत्रियों और सी जे पी के नेताओं के बीच वार्ता हुई, जिसके बाद धर्मेन्द्र प्रधान ने इस्तीफा दे दिया, जिसकी माँग प्रारंभ से ही छात्र कर रहे थे।

जिस दिन जंतर मंतर का आंदोलन समाप्त हुआ, उसी दिन यानि 25 जलाई को झारखंड के छात्र छात्राओं का आंदोलन राँची में प्रारंभ हुआ। यह आंदोलन झारखंड लोक सेवा आयोग द्वारा समय पर भर्ती नहीं होने तथा पेपर लीक और अन्य धांधलियों के विरुद्ध था ,जिसके कारण झारखंड के प्रतिभाशाली युवक वहाँ की सरकारी नौकरी प्राप्त नहीं कर पा रहे थे। इस आंदोलन में भी देवेंद्र महतो के नेतृत्व में कुछ छात्र आमरण अनशन पर बैठे। इस आंदोलन को अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् का समर्थन प्राप्त था। छात्रों की माँग थी कि झे पी एस सी की छह प्रतियोगी परीक्षाएं रद्द की जाएं। झारखंड सरकार के तीन मंत्रियों ने आंदोलनकारी छात्रों से दो बार बात की और चार परीक्षाएं रद्द कर दी गईं। यह उल्लेखनीय है कि झे पी एस सी द्वारा 2015 में विज्ञापित रिक्त पदों पर 11 साल में भी भर्ती नहीं हो पाई।

दोनों आन्दोलनों की समानता की बात तो हो गई। दोनों आन्दोलन परीक्षाओं की गड़बड़, पेपर लीक, पक्षपात आदि के विरुद्ध था। अब यह देखना भी उपयुक्त होगा कि जंतर मंतर और राँची के आंदोलनों के प्रति सरकारों, विपक्षी दलों और मीडिया के रुख में क्या अंतर था? पहले सरकार के रुख की बात करें।जंतरमंतर के आन्दोलनकारियों को सरकार ,सत्ताधारी दल के नेताओं, मंत्रियों ने आतंकवादी, विदेशी पैसे से पोषित, अर्बन नक्सल आदि तक बताया। छात्रों को बहुत बदनाम किया गया। एक महीने तक सरकार इसका संज्ञान ही नहीं लिया। झारखंड सरकार ने ऐसा कुछ नहीं किया। कुछ ही दिनों में झारखंड सरकार के तीन मंत्रियों ने आंदोलनकारी छात्रों से बात की और उनकी 98 माँगें मान लीं। झे पी एस सी के अध्यक्ष और पूर्व मुख्य सचिव ख्यांगते हटाकर उसे गिरफ्तार किया गया।

जंतर मंतर में पुलिस ने आंदोलन में शामिल होने वाले लोगों की सभी मूल सुविधाएं तक बंद कर दी थीं। अनशन स्थल तक खाना भी नहीं लाने दिया जा रहा था। 20 जुलाई को पूरी निर्ममता के साथ आंदोलनकारियों पर कील लगी लाठियों से वार किया, छात्राओं के साथ अभद्र व्यवहार किया गया। उन पर पेलेट गन भी चलाई गई। इसके सबूत मीडिया को दिए गए। अरे टी आई में प्राप्त सूचना के अनुसार सरकारी अस्पतालों ने माना कि पेलेट गन से घायल हुए छात्र वहां भर्ती हुए। सरकार, हालांकि इससे इनकार करती रही। आर ए एफ के कई जवान बिना नेम प्लेट के थे। इसके विपरित झारखंड पुलिस ने बलपूर्वक लाठी चार्ज तो किया लेकिन वीडियो के अनुसार पुलिस ने आंदोलनकारी छात्रों को बारिश से बचाने के लिए अपने छातों के नीचे लिया। विपक्षी दलों ने इस आंदोलन को समर्थन दिया और उनके कई नेता जैसे समाजवादी पार्टी के अखिलेश यादव, डिंपल यादव,टी एम सी की महुआ मोइत्रा भीम पार्टी के चंद्रशेखर आज़ाद मंच पर समर्थन में गए। कई सोशल मीडिया के पत्रकार जैसे योगेंद्र यादव, अजीत अंजुम, रवीशकुमार आदि ने इसे पूरी तरह कवर किया। मुख्य धारा के टी वी चैनलों में से अधिकांश ने इसके बारे में कोई समाचार या रिपोर्ट प्रसारित नहीं की। यूं कहें कि गोदी मीडिया ने इसे पूरी तरह नजरअंदाज किया तो गलत नहीं होगा। राँची के आंदोलन को सी जे पी ने समर्थन दिया लेकिन उसका कोई बड़ा नेता रांची नहीं पहुंचा। सभी राष्ट्रीय चैनलों (गोदी मीडिया) ने इसे दिन भर प्रमुखता से दिखाया।

पुलिस ने कील लगी लाठियों का प्रयोग किया और छात्राओं पर गलत तरह से लाठी का प्रयोग भी किया गया। पैलेट गन के छर्रों से छात्र घायल हुए। लगभग सभी माँगे मान ली जाने और झे पी एस सी के अध्यक्ष द्वारा इस्तीफा दिए जाने और उसे गिरफ्तार करने के बावजूद छात्रों ने 10 अगस्त को विधानसभा में प्रवेश करने का प्रयास किया। पुलिस द्वारा लाठी चार्ज करके छात्रों को तितर बितर किया गया। रांची के आंदोलनकारी छात्रों के लिए भोजन की व्यवस्था ए बी वी पी ने की जबकि जंतर पर यह व्यवस्था लंगर, जुनैद और साधारण व्यक्तियों ने की। 10 अगस्त पर छात्रों पर लाठी चार्ज के विरोध में बी जे पी ने झारखंड बंद का आ ान किया। जंतर मंतर की घटना के बाद किसी राजनीतिक दल द्वारा इस पकार बंद का आ ान नहीं किया गया, जबकि बर्बरता जंतर मंतर पर अधिक हुई। भाजपा द्वारा बार बार यह कहा गया कि राहुल गांधी और सी जे पी के नेता रांची क्यों नहीं गए? यह उल्लेखनीय है कि झारखंड में झे एम एम की सरकार है जिसमें कांठोस भी भागीदार है। इसके बावजूद राहुल गांधी ने झारखंड के आंदोलन को अपना समर्थन दिया। किसी विपक्षी दल ने इन छात्रों को आतंकवादी या अर्बन नक्सल नहीं बताया न यह कहा कि इसे विदेशों से धन मिला। केंद्र में क्योंकि भाजपा सरकार है, बी जे पी के किसी नेता ने जंतर मंतर के आंदोलन को समर्थन में बयान नहीं दिया। जंतर मंतर पर पुलिस ज़्यादती की जांच के लिए उच्च स्तरीय समिति के गठन की घोषणा की गई किंतु वह अभी तक बनाई नहीं गई है।

कुल मिलाकर हम कह सकते हैं कि जंतर मंतर और राँची के छात्र आंदोलनों में कई समानताएं होने के बावजूद इनके प्रति मीडिया, सरकार, पुलिस , सत्ता और विपक्षियों के दृष्टिकोण में बहुत अंतर था। राजनीतिक दलों द्वारा दोनों आंदोलनों का लाभ उठाया गया। जंतर मंतर का आंदोलन केवल सोशल मीडिया की बदौलत जनता तक पहुंच पाया। अब स्कूल के छात्र भी सुविधाओं और शिक्षकों की कमी को लेकर आंदोलित होने लगे हैं, जिसके फलस्वरूप प्रशासन आवश्यक कार्यवाही करने हेतु बाध्य हुआ है। यह देश के भविष्य के लिए अच्छा संकेत है। संभव है, इसका असर आगामी चुनावों में भी देखने को मिलेगा। इन दोनों आंदोलनों का एक लाभ अवश्य हुआ कि शिक्षा और बेरोजगारी देश में चर्चा के केंद्र में आ गए हैं। युवाओं को अपने पक्ष में करने के लिए प्रधानमंत्री मोदी को आधी रात को रील बनाकर सोशल मीडिया पर डालनी पड़ी।

राजेन्द्र भाणावत, (पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)।